धन्य हैं वे जो...

दिन 1
धन्य है हर एक जो प्रभु का भय मानता है

"*क्या ही धन्य है हर एक जो प्रभु का भय मानता है, और उसके मार्गों पर चलता है!*" *भजन संहिता* **128:1**

प्रभु का भय मानना बुद्धि का मूल है (नीतिवचन 1:7) प्रभु का भय मानना बुराई से बैर रखना है (नीतिवचन 8:13)

जब हम प्रभु का भय मानते हैं, तो हम धन्य हो जाते हैं। जब हम प्रभु की आज्ञा मानकर उसके मार्गों पर चलते हैं, तो हम धन्य हो जाते हैं। प्रभु के भय को हम कब समझ पाएंगे?

हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; और प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे, और उसको चांदी की नाईं ढूंढे, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे; तो तू प्रभु के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।(नीतिवचन 2:1-5)

उपयोग:

भजन संहिता 128 पढ़ो और इस भजन के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 2
धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं

"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"
मत्ती **5:3**

मन के दीन होने का अर्थ है नम्र होना, स्वयं का सही अनुमान लगाना। मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझको मिला है, तुम में से हर एक से यह कहता हूँ: जितना तुम्हें स्वयं को समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी व्यक्ति अपने आपको ऊंचा न समझे। जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिणाम के अनुसार बांट दिया है वैसा ही सुबुद्धि के साथ वो अपने को समझे।(रोमियों 12:3)

जो मन में दीन है वो यह जानता है कि उसके पास कोई आत्मिक संपत्ति नहीं है। वो जानते हैं कि आत्मिक्ता में वो दिवालिया हैं। एक कंगाल व्यक्ति वो होता है जिसके पास जो कुछ भी है या उसे जो कुछ भी मिलता है उसके लिये उसे भीख मांगना पड़ता है।

स्वर्ग का राज्य जाति, अर्जित योग्यता, सैन्य उत्साह और धन के आधार पर नहीं दिया जाता है। यह गरीबों को दिया जाता है; वे जानते हैं कि वो बदले में कुछ नहीं दे सकते और देने का प्रयत्न भी नहीं करते। वो सिर्फ दया की गुहार लगाते हैं।(नीतिवचन 2:1-5)

उपयोग:
हम किस चीज़ को पकड़े हुए हैं, ऐसी कौनसी बातें हैं जिन्हें छोड़ना हमारे लिये कठिन है? परमेश्वर से दया की मांग करो।

दिन 3
धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं

"*धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे।*" *मत्ती* **5:4**

यीशु, हमारे पापों के परिणामों के प्रति हमारे सरल शोक या चलता है वाले स्वभाव की बात नहीं करते हैं, बल्कि हमारी बदत्तर हालत के लिये परमेश्वर के सम्मुख गहरे शोक के साथ जाने की बात कर रहे हैं। बदत्तर और अति दरिद्र हालात में घिरे एक व्यक्ति और समाज दोनो की परिस्थिती है अपने उस हालात के लिये रोना; परन्तु इस एहसास के साथ कि उनकी ये हालत उनके अपने पापों के कारण है। वो जो विलाप करते हैं वो वास्तव में अपने पापों और उन पापों के प्रभावों का विलाप करते हैं।

यह विलाप परमेश्वर भक्ति का ऐसा दु:ख है जो पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है जिसका वर्णन पौलुस 2कुरून्थियों 7:10 में करता है, परमेश्वर भक्ति का दु:ख ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है। फिर उस से पछताना नहीं पड़ता। परन्तु सांसारिक दु:ख मृत्यु उत्पन्न करता है।

वो जो अपने पाप और अपने पापमय स्थिती का शोक करते हैं, उनको शान्ति देने की प्रतिज्ञा की गई है। इस शोक को परमेश्वर हमारे जीवन में एक मार्ग की तरह लाते हैं, ठिकाने की तरह नहीं। लगाते हैं।

उपयोग:
ऐसे कौनसे पाप हैं जो आपको अपने अन्दर, अपने परिवार के अन्दर और अपने समाज में दिखाई देते हैं? इनसे छुटकारा पाने के लिये प्रार्थना करो।

दिन 4
धन्य हैं वे, जो नम्र हैं

"धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"
मत्ती **5:5**

नम्रता का अर्थ कमज़ोरी नहीं है। यह सामर्थ पर नियंत्रण के संदर्भ में है। नम्रता को समझने का सबसे उत्तम उदाहरण है, युद्ध का घोड़ा। इन दो दृश्यों की कल्पना करो:

दृश्य 1 : आप एक घोड़े पर सवार हैं। जहां आप जाना चाहेंगे घोड़ा आपको वहीं ले जाएगा। घोड़ा आपके सारे निर्देशों का पालन करेगा।

दृश्य 2 : आप एक घोड़ा हो। क्या आप यीशु मसीह को हर उस जगह ले जाएंगे जहां वो आपको ले जाना चाहते हैं? कल्पना करो कि खुरदरा पत्थरीली जगह है, पहाड़ पर चढ़ना है, पानी की लहरों से होकर जाना है, दुश्मन और उसके सभी तीरों का सामना करना है....क्या आप ऐसी जगहों से यीशु को ले जाएंगे?

हम इतनी ही नम्रता रखते हैं, जहां हमारे अधिकारों और विशेषाधिकारों पर हम अपनी इच्छानुसार काबु कर सकें और ऐसा हम इसलिये करते हैं क्योंकि हमें पूरा आत्मविश्वास है कि परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है और वो हमारे काम की सुरक्षा करेगा। नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

उपयोग:
आपका ध्यान रखने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो। आपकी नम्रता के कारण जिन बातों पर परमेश्वर ने आपको विजय दिलाई है उन विजयों को याद रखो और परमेश्वर की प्रशंसा करो।

दिन 5
धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं

"धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" मत्ती **5:6**

एक स्वस्थ व्यक्ति में शारीरिक भूख और प्यास स्वभाविक है। यह स्वस्थता दर्शाता है, यह वास्तविक है, गहरा है, यह दर्द उत्पन्न कर सकता है, एक व्यक्ति को अपनी ताल पर नचा सकता है....

इस संसार की शारीरिक भूख एक ऐसी भूख है जो हमेशा बनी रहती है और कभी भी पूर्णतः तृप्त नहीं होती। हम ऐसे मसीहियों को देखते हैं जिनको अनेक बातों की भूख रहती है जैसेः शक्ति, अधिकार, सफलता, आराम, खुशी – लेकिन ऐसे कितने हैं जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं?

यीशु मसीह ने भूखों को भोजन देने का वादा किया है; जितना भी वो खा सकें उतना देने का वादा। यह एक अजीब भूख है जो हमें तृप्त भी करती है और फिर और अधिक पाने की चाह भी रखती है।

उपयोग:
वो आखिरी समय कब था जब आप धार्मिकता के लिये भूखे और प्यासे थे? आपको किन बातों की भूख और प्यास है? उन बातों के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 6
धन्य हैं वे, जो दयावान हैं

"धन्य हैं वे, जो दयावान हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।"
मत्ती **5:7**

ये धन्य वचन जब उन लोगों से बात करते हैं जो दया दिखाएंगे, तो तब ये वचन उन लोगों से भी बात करते हैं जिन पर पहले ही दया की गई है।

दयावान उन पर दया दिखाएंगे जो कमज़ोर और गरीब हैं। दयावान व्यक्ति वो है जो हमेशा उन लोगों को ढूंढता रहता है जो रोते और विलाप करते हैं। दयावान व्यक्ति दूसरों को क्षमा करता, और हमेशा टूटे रिश्तों को जोड़ने का प्रयास करता है। दयावान को दूसरों से बहुत अधिक पाने की चाह नहीं होती है। दयावान व्यक्ति उन लोगों पर करूणा करता है जो बाहरी रूप से पापी हैं।

यदि आप दूसरों से दया पाने की इच्छा रखते हैं – विशेषत: परमेश्वर से – तो दूसरों के प्रति दया दिखाने का खयाल हमेशा आपके मन में होना चाहिये।

उपयोग:
किस पर और किन परिस्थितियों में दया दिखाना हमारे लिये कठिन हो जाता है? आज इस स्थिती में बदलाव लाने की आपकी योजना क्या है?

दिन 7
धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं

"धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"
मत्ती **5:8**

कोई वस्तु शुद्ध है ये हमें कैसे पता चलता है? कभी–कभार हमारी समझ ये होती है कि, यदि पानी बिलकुल पारदर्शक है, तो वो शुद्ध है। दूध का स्वाद चखने के बाद हो सकता है कि हम उसकी शुद्धता को पहचान लें। तो अलग–अलग चीज़ों की शुद्धता को मापने के हमारे अलग–अलग मापदण्ड हैं।

जब हम हर एक बात, हर एक परिस्थीती, हर एक रिश्ते में परमेश्वर को देखते हैं, तो क्या हम कह सकते हैं कि हमारा मन शुद्ध है? (तीतुस 1:15)शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं। उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।

(सभोपदेशक 7:14) सुख के दिन सुख मान और दु:ख के दिन सोच; क्योंकि पमेश्वर ने दोनों को एक ही संग रखा है, जिस से मनुष्य अपने बाद होनेवाली किसी बात को न बूझ सके।

उपयोग:
समय निकालकर उन कठिन परिस्थितियों के बारे में सोचो जिनका सामना आप कर रहे हैं और यह पता लगाने की कोशिश करो कि परमेश्वर ने आपके जीवन में ये कठिन परिस्थिती क्यों आने दिया। परमेश्वर से प्रार्थना करो और मदद मांगो कि जिस किसी बात का आप सामना करें तो उसमें आप परमेश्वर को देख पाएं।

दिन 8
धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं

"*धन्य हैं वे, जो मेल-मिलाप कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।*" *मत्ती* **5:9**

यह वचन उन लोगों का वर्णन नहीं करता है, जो शान्ति से जीते हैं, बल्कि उन लोगो के बारे में कह रहा है जो बुराई को भलाई से जीतकर वास्तव में मेल–मिलाप कराते हैं। इस मेल–मिलाप को पाने का एक तरीका है सुसमाचार का प्रचार, क्योंकि मेल–मिलाप कराने की सेवा परमेश्वर ने हमको सौंपा है (2कुरून्थियों 5:18)। प्रचार(इवँजलाईज़) करके हम मनुष्यों का मेल उस परमेश्वर से कराते हैं जिसे उन लोगों ने अस्वीकार किया और चोट पहुंचाई।

मेल–मिलाप करानेवाले का प्रतिफल यह है कि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाते हैं। ऐसे लोग भागीदार हैं परमेश्वर के उस जुनून के जो शान्ति और मेल–मिलाप बहाल कराता और मनुष्यों और परमेश्वर के बीच बनी दीवार को ग़िराता है।

उपयोग:
सुसमाचार फैलाने की योजना बनाओ।

दिन 9
धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं

"*धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।*" *मत्ती* **5:10**

पूरी तरह से एक समर्पित मसीही बनना आसान नहीं है। हमारा समाज न तो परमेश्वर का मित्र है और न ही परमेश्वर के पीछे चलनेवालों का। हमें यह अच्छा लगे या ना लगे, परन्तु हमारे और संसार के बीच में एक युद्ध है। क्यों? क्योंकि हम संसार से अलग हैं और हमारे स्वभाव संसार से भिन्न हैं।

जिन सतावों से हम गुज़रते हैं उन सतावों के कारण हमे खुद को धन्य समझना चाहिये क्योंकि हम इस संसार के नहीं परन्तु स्वर्ग के राज्य के वारिस हैं।

उपयोग:
एक मसीही होने के नाते आपने अपने जीवन में जो सताव सहा है उसे याद करो और परमेश्वर की महिमा करो।

दिन 10
धन्य हो तुम, जब मनुष्य तुम्हारी निन्दा करें

"धन्य हो तुम, जब मेरे कारण मनुष्य तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब तुम आनन्दित और मगन होना; क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा पुरस्कार है। उन्होंने उन नबियों को जो तुम से पहले हुए हैं, इसी प्रकार सताया था।" मत्ती **5:11-12**

अपमान और ईर्ष्या से भरे शब्दों को यीशु मसीह सताए जाने के साथ जोड़ते हैं। सताव के हमारे विचार को हम केवल वास्तविक विरोध या दारूण यातना तक ही सीमित नहीं कर सकते।

इन धन्य वचनों में जिन मूल्यों और चरित्र का वर्णन किया गया है ये सब संसार के सोचने के ढंग से बिलकुल विपरीत हैं और इसीलिये संसार इन भले लोगों को सताता है। हो सकता है कि दूसरों के मुकाबले हमारा सताव उतना गहरा नहीं है, लेकिन यदि कोई आपके बारे में बुरा नहीं कहता है, तो प्रश्न ये उठता है कि क्या इन धन्य वचनों का आपके जीवन में विशेष स्थान है या नहीं?

तो आओ इस वचन के अनुसार आनन्दित और मगन रहने का हम भरसक प्रयत्न करें, क्योंकि स्वर्ग में हमारे लिये बड़ा पुरस्कार है।

उपयोग:
जब हम अपमानित किये जाते हैं, तब हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? अपमान के प्रति हमारी प्रतिक्रिया को बदलने के लिये हमें अपने में कौनसे बदलाव करने होंगे ताकि फिर से यदि हमारा अपमान किया जाए तो हमारी प्रतिक्रिया इस संसार के समान ना हो?

दिन 11
धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते हैं

“प्रभु के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है, या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता? क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते, और हर समय धर्म के काम करते हैं।” भजन संहिता **106:2-3**

वे जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं जैसे न्यायसंगत रहना, और हर समय धर्म के काम करना, तो ऐसे लोग परमेश्वर की प्रशंसा करने का काम करते हैं।

प्रभु हमसे क्या चाहते हैं? हे मनुष्य वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और प्रभु तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?(मीका 6:8)

उपयोग:
कल घटी कुछ ऐसी घटनाओं की सूचि बनाओ जिनसे शायद आप उत्तमता से निपट सकते थे, और उन स्थितियों द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 12
धन्य हैं वे जो प्रभु की आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहते हैं

"क्या ही धन्य है वह पुरूष जो प्रभु का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है!" भजन संहिता **112:1**

यह धन्य व्यक्ति दुर्गति और अनैच्छिक दायित्व के कारण परमेश्वर का भय मानता है ऐसा नहीं है। यह भजन ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहा है जो परमेश्वर की आज्ञाओं से अति प्रसन्न होता है।

एक व्यक्ति जो परमेश्वर का भय मानता है, उसे दूसरे किसी बात का डर नहीं होता; जो व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं से अति प्रसन्न होता है, वह हर प्रकार के असामान्य सांसारिक अभिलाषाओं से मुक्त रहता है।

जब हम परमेश्वर की से प्रेम करते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं तब इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं। परमेश्व का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं हैं। जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर विजय प्राप्त करता है, हमारा यह विश्वास है कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र हैं। (1यूहन्ना 5:2-4)

उपयोग:

ऐसे कौनसे वचन हैं जिनका पालन करना आपको कष्टदायक लगता है या पहले लगता था? उन वचनों के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 13
धन्य हैं वे जो बुद्धि पाते हैं

"*क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे।*" *नीतिवचन* 3:13

चाहे हम इस समय के बारे में या अनन्तकाल के बारे में सोचें कोई भी अनमोल हीरे–जवाहरात या सांसारिक धन इतने मौल्यवान नहीं हैं कि उनकी तुलना सच्ची बुद्धिमत्ता से की जा सके।

बुद्धिमत्ता को हमें अपना सर्वस्व समझना चाहिये, और अपना सबकुछ इसमें लगा देना चाहिये, और इसे पाने के लिये सबकुछ त्याग करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

यह बुद्धिमत्ता है प्रभु यीशु मसीह और उनका उद्धार, जिसे विश्वास और प्रार्थना के द्वारा ढूंढा और पाया जा सकता है।

उपयोग:
बुद्धि पाने और समझ प्राप्त करने के लिये आप क्या प्रयत्न कर रहे हैं?

दिन 14
धन्य हैं वे जो आनन्द की ललकार को पहचाते हैं

"क्या ही धन्य है वह समाज, जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है; हे प्रभु वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं।"
***भजन संहिता* 89:15**

जो लोग परमेश्वर के अतुलनीय सामर्थ, उनकी धार्मिकता उनका न्याय, और उनकी दया और सच्चाई के आनन्द की ललकार के सच को पहचानते हैं, वे धन्य लोग हैं और अनेक रीति से आशिषित हैं।

प्रकाश में चलने का सरल सा अर्थ है ईश्वरीय उपस्थिती और ईश्वरीय प्रेमपूर्ण दया और दोस्ती के अनुभव की चेतना; हमारे जीवन के उस रास्ते पर जिसमें हम अपने जीवन की यात्रा में हैं, या फिर हमारे आस–पास के एक ऐसे माहौल में जिसमें हमारे सभी कार्य किये जाते हैं और जिसमें हम हमेशा बने रहते हैं; और हमारा इस तरह से प्रकाश में चलना उस वाहन चालक के समान है जो हमेशा चौकन्ना रहता है, ठीक इसी तरह हमारा प्रकाश में चलना हमें बुराई और पाप से बचाकर रखता है।

उपयोग:
अपने जीवन के उन समयों को याद करो जब आप **पूरे उत्साह के साथ प्रकाश में चले हैं** और इसमें और अधिक आप कैसे बढ़ सकते हैं इसपर विचार करो।

दिन 15
धन्य हैं वे जो कंगाल की सुधि रखते हैं

"क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विपत्ति के दिन प्रभु उसको बचाएगा।" भजन संहिता **41:1**

परमेश्वर के लोग भी गरीबी, बीमारी या बाहरी दु:खों से त्रस्त हैं, परन्तु प्रभु उनकी सुधि लेगा, और उनकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। एक विश्वासी अपने प्रभु के उदाहरण से ही अपने दूसरे गरीब और दु:खी विश्वासी भाईयों की सुधि लेना सीखता है।

आपके आस–पास अनगिनत ऐसे लोग हैं जो शायद सांसारिक दृष्टि से गरीब या कंगाल नहीं हैं, परन्तु वो प्रेम, आशा और परमेश्वर के ज्ञान में बहुत गरीब हैं।

पूरी करूणा से कंगालों और कमज़ोरों से प्रेम करने वाला हमेशा दूसरों के बारे में सोचता है और इसिलिये परमेश्वर उसकी सुधि लेता है। परमेश्वर हमारे ही माप से हमें तौलता है।

उपयोग:
गरीब और कमज़ोर के लिये कुछ विशेष करो।

दिन 16
धन्य हैं वे जो मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाए रहते हैं

"*क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता रन् मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाए रहता है।*" ***नीतिवचन* 8:34**

यह आशिष उन लोगों को मिलता है जो न केवल बुद्धि की बातें सुनते परन्तु बुद्धि पाने के लिये अपने आपको असुविधा में भी डालने के लिये भी तैयार रहते हैं। वो प्रतिदिन उसके फाटकों पर टकटकी लगाए देखते रहते हैं और उसकी डेवढ़ी पर खड़े रहते हैं। वो आकस्मिक रूप से नहीं परन्तु एक संकल्प के साथ ज्ञान प्राप्त करने के पीछे लगे रहते हैं।

निश्चित ही मसीह की आवाज़ को हमें बच्चों की तरह तत्पर रहकर सुनना चाहिये। धन्य हैं वे, जो उद्धारकर्त्ता की आवाज़ सुनते और प्रतिदिन वचनों को पढ़कर, उनपर मनन और प्रार्थना करके उसकी बाट जोहते हैं।

उपयोग:
परमेश्वर के वचनों पर मनन करने में क्या हमें और बढ़ना है? इस क्षेत्र में उन्नति करने की योजना बनाओ।

दिन 17
धन्य हैं वे जिनका हृदय तीर्थयात्रा पर लगा रहता है

"*क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिय्योन की सड़क सुधि रहती है।" भजन संहिता* **84:5**

वह मनुष्य जो परमेश्वर से शक्ति पाता है उसका हृदय भी तीर्थयात्रा में लगा रहता है। शक्ति पाने के लिये वह खुद पर या संसार पर भरोसा नहीं रखता, परन्तु वह अपने आपको इस संसार में एक मेहमान, यात्री और एक तीर्थयात्री समझता है। उसकी सच्ची शक्ति और सम्पत्ति आनेवाले संसार में है।

परमेश्वर के निवासस्थान के प्रति प्रेम, एक तीर्थयात्री की इस शक्ति और हृदय को दर्शाता है। जहां वह दूसरे तीर्थयात्रियों के साथ परमेश्वर से मिलता है और फिर दूसरे तीर्थयात्रियों के संग उसे भी शक्ति प्राप्त होती है। परमेश्वर के निवासस्थान के प्रति प्रेम और लालसा, इस संसार से छुटकारा पाने का रास्ता नहीं है, परन्तु यह समय है इस संसार में रहकर जीवन की तैयारी करने का है।

उपयोग:
क्या आप कभी किसी तीर्थयात्रा/मिशन टीम में गए हैं? भविष्य में इस तरह की यात्रा करने के बारे में आपका क्या विचार है?

दिन 18
क्या ही धन्य है वह; जिसे तू चुनकर अपने समीप आने देता है, कि वह तेरे आंगनों में वास करे

"क्या ही धन्य है वह; जिसे तू चुनकर अपने समीप आने देता है, कि वह तेरे आंगनों में वास करे! हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम-उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे।" भजन संहिता 65:4

मनुष्य और परमेश्वर के बीच जो सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध का कारण हैं परमेश्वर। इस सम्बन्ध की शुरूआत तब होती है जब परमेश्वर किसी स्त्री या पुरूष को चुनता है कि वो उसके पास आएं और उसके आंगनों में वास करें। एक बार जब ये सम्बन्ध जुड़ जाता है और आनन्द देने लगता है, तो परमेश्वर और मनुष्या के बीच का ये सम्बन्ध मनुष्यों को तृप्त करता है। परमेश्वर के घर में उन्हें उत्तम वस्तुओं से भरी जगह का अनुभव होता है।

उपयोग:
उस समय को याद करो जब परमेश्वर ने आपको चुना और सारी उत्तम वस्तुएं आपको मिली और इन बातों के लिये परमेश्वर का आभार प्रकट करो।

दिन 19
धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए

"*धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।*" *मत्ती* **11:6**

यीशु मसीह इस बात को भली–भान्ती जानते थे कि, यहूदी लोग जिस राजा के आने और रोमी सरकार के राजनैतिक प्रभुत्व से उन्हें छुड़ाने की अपेक्षा कर रहे थे उनकी उस अपेक्षा के बिलकुल विपरीत रूप में यीशु का आना और अपना पूरा ध्यान अपने धर्मकार्य पर लगाना उन यहूदियों के लिये अपमानजनक था। लेकिन जिन लोगों को उनकी अपेक्षा के खिलाफ मसीह का आना अपमानजनक नहीं लगा उनके लिये यह एक आशीर्वाद था।

यीशु के समय की दूसरी बातें जो उन यहूदियों को अपमानजनक लगीं वो थीं, एक गरीब माता–पिता के घर यीशु का जन्म, जिन परिस्थितियों में एक कुवांरी के द्वारा यीशु का जन्म हुआ, और जिस जगह पर यीशु का जन्म हुआ, जो उनके विचारानुसार गलील होना चाहिये था, और एकदम छोटे से रूतबे में जन्म होना आदि।

उपयोग:

जब कोई परमेश्वर के वचनों को लेकर हमारे पास आता है, तो उस व्यक्ति की ओर देखकर हमारे जीवन के किन क्षेत्रों में हम अपमानित महसूस करते हैं? उन क्षेत्रों को याद कर उनके द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 20
क्या ही धन्य है वह जाति जिसका प्रभु परमेश्वर है

"क्या ही धन्य है वह जाति जिसका प्रभु परमेश्वर है, और वह समाज जिसे उस ने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया है।" भजनसंहिता **33:12**

एक ही सच्चे परमेश्वर की आराधना करके इस्त्राएल खुश था। यहोवा से प्रकाशन पाना, चुने हुए राष्ट्र के लिये एक आशिष की बात थी। जबकि अन्य लोग अपनी मूर्तियों के आगे गिड़गिड़ाने में मग्न थे, तब चुने हुए लोगों को एक आध्यात्मिक धर्म के कारण ऊंचा उठाया गया, जिसने उन्हें एक अदृष्य परमेश्वर से मिलवाया और उन पर भरोसा करने में उनकी अगुवाई की।

हमें किसी छोटी–मोटी सम्पत्ति के लिये नहीं चुना गया है और न ही बिना किसी उद्देश्य के चुना गया है: हम एक विशेष स्थान और हमारे प्रभु परमेश्वर के आनन्द के लिये चुने गए हैं। इतने आशिषित होने के कारण आओ हमें मिले अपने भाग में हम आनन्दित हों, और हमारे जीवनों के द्वारा इस संसार को बताएं कि हम एक महिमावान मालिक की सेवकाई करते हैं।

उपयोग:

हमारे राष्ट्र के लिये प्रार्थना करो।

दिन 21
धन्य है वह जो निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है

"जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपने मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है। "
नीतिवचन **28:14**

दु:ख की बात है कि भक्ति (परमेश्वर का भय मानना) और आनन्द (आशिषित) साधरणत: एक–दूसरे से जुड़े नहीं हैं। एक भक्तिपूर्ण व्यक्ति को अक्सर चिड़चिड़ा और अप्रसन्न व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। तो भी जिस हद्द तक कोई निरन्तर श्रद्धापूर्ण हो सकता है, तो वास्तविकता में वह प्रसन्न हो सकता है।

परमेश्वर का भय मानना और मन कठोर करना दोनों को एक दूसरे के विरोधी बताया गया है। एक व्यक्ति जो अपने मन को कठोर कर लेता है, वह एक सच्चा श्रद्धालु नहीं बन सकता, परन्तु इस जीवन में या आनेवाले जीवन में वह विपत्ति में पड़ता है।

उपयोग:
आपका हृदय कैसा है परमेश्वर का भय माननेवाला या कठोर? अपने हृदय के लिये प्रार्थना करो।

दिन 22
धन्य है वह जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता

"क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता; और न पापियों के मार्ग में खड़ा होताा; और न ठट्ठा करने वालों की मंडली में बैठता है!" भजनसंहिता 1:1

न तो चलता है...न खड़ा रहता है...और न ही बैठता है: एक धन्य मनुष्य कुछ विशेष बातें नहीं करता है। एक ऐसा रास्ता है जिसपर वह नहीं चलता, एक ऐसा मार्ग है जिसपर वह नहीं खड़ा होता, और एक बैठने की एक ऐसी जगह है जिसपर वह नहीं बैठता।

ये गुण सम्भवत: एक व्यक्ति की सोच, उसका बर्ताव और उसके सम्बन्ध के बारे में बताते हैं। एक धार्मिक व्यक्ति और एक अधार्मिक व्यक्ति अपने विचारों, अपने बर्ताव और अपने सम्बन्धों में एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

उपयोग:
इन क्षेत्रों में हमारे बारे में परमेश्वर की राय क्या होगी? आशिषित होने के लिये हमें किन क्षेत्रों में बदलना होगा?

दिन 23
धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है

"*परखकर देखो कि प्रभु कैसा भला है! क्या ही धन्य है वो पुरूष जो उसकी शरण लेता है।" भजनसंहिता* 34:8

चखना और देखना दोनों ही एक शारीरिक अनुभव है, एक तरीका है जिसके द्वारा हम सांसारिक बातों को समझ पाते हैं। इसी प्रकार कुछ हद्द तक विश्वास भी एक आत्मिक अनुभव है, और इसके द्वारा हम आत्मिक संसार की बातों को समझ पाते हैं। चखना और देखना परमेश्वर पर भरोसा करने, उनसे प्रेम करने, उन्हें खोजने और उनकी मदद पाने के समान हैं।

वे लोग जिनका भरोसा खुद पर है और जो ये समझते हैं कि उनके अपने प्रयत्न उनके लिये काफी हैं; उन्हें हमेशा घटी रहेगी; परन्तु जो प्रभु की शरण में रहते हैं उन्हें किसी बात की घटी न होगी। जो शान्ति से काम करते और सिर्फ अपने काम से काम रखते हैं; उन्हें कुछ घटी न होगी।

उपयोग:
भजनसंहिता 34 पढ़ो और उसके वचनों के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 24
क्या ही धन्य है वह पुरूष, जो अभिमानियों की ओर मुंह न फेरता हो

"क्या ही धन्य है वह पुरूष, जो प्रभु पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेवालों की ओर मुंह न फेरता हो।" भजनसंहिता **40:4**

अभिमानी लोग हरएक व्यक्ति से यह अपेक्षा करते हैं कि वे उनके सामने झुकें और उनपर श्रद्धा दिखाएं, बिलकुल ऐसे जैसे इस्त्राएल में सोने के बच्छड़े को दण्डवत करना फिर से स्थापित किया गया था; परन्तु एक मतलबी विश्वासी अति कुलीन होते हैं और पैसेवाले लोग उनके लिये कोई मायने नहीं रखते, और न ही वे विवेकशून्य प्रतिष्ठा पाने के लिये दण्डवत करते हैं। धर्मी जन घमण्डी आत्म–परिणाम की बजाए विनम्रता का सम्मान करते हैं।

एक व्यक्ति लाजरस के समान गरीब और मोर्दैकै के जितना घृणित, हिजकिय्याह के जितना बीमार, एलिय्याह के समान अकेला हो सकता है, परन्तु जब उसका विश्वासी हाथ परमेश्वर को थामे रहता है, तो उनकी कोई भी बाहरी पीड़ा उन्हें धन्य लोगों में गिने जाने से नहीं रोक सकती।

उपयोग:
आपके जीवन में घटी कुछ ऐसी घटनाओं की सूचि बनाओ जब आपने परमेश्वर की बजाए किसी और पर भरोसा किया और उन्हें याद करते हुए प्रार्थना करो।

दिन 25
क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है

"*क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान।*" *अय्यूब* **5:17**

एक भला मनुष्य चाहे पीड़ा में हो, तो भी प्रसन्न रहता है, क्योंकि परमेश्वर में अपने आनन्द को उसने खोया नहीं है, और न ही स्वर्ग में अपना हक्क; पिड़ित होना उसके लिये प्रसन्नता है। सुधार उसके भ्रष्टाचार को कम करता है, उसके ह्रदय को सांसारिक लालसाओं से छुड़ाता है, उसे परमेश्वर के और निकट लाता है, उसे अपने पवित्र शास्त्र की ओर लाता है, उसे अपने घुटने पर लाता है।

हालांकि परमेश्वर चोट पहुंचाता है, फिर भी वह उसके लोग जो पीड़ित हैं वह उनकी मदद करता है, और सही समय पर उन्हें उनकी पीड़ा से छुड़ाता है।

उपयोग:
उन समयों को याद करो जब आपको सुधार की शिक्षा दी गई और उन्हें याद करते हुए प्रार्थना करो।

दिन 26

क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया

"क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का प्रभु लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।"
***भजनसंहिता* 32:1-2**

इन पहले दो वचनों में दाऊद ने पाप का वर्णन करने के लिये तीन शब्दों का उपयोग किया है।

- अपराध का तात्पर्य है सीमा का उल्लंघन, अधिकार की परवाह न करना।
- पाप का तात्पर्य है लक्ष्य तक न पहुंचना या लक्ष्य को चूक जाना।
- अधर्म का तात्पर्य है टेढ़ी चाल और विकृति।

पहले दो वचनों में दाऊद ने परमेश्वर पाप को दूर हटाने के लिये क्या करते हैं यह बताने के लिये तीन शब्दों का उपयोग किया है।

- क्षमा किए जाने का तात्पर्य है एक बोझ का उठाना या कर्ज़ माफ करना।
- ढांपने का तात्पर्य है बलिदान के लहू के द्वारा पाप का ढांपा जाना।
- लेखा न लेने का तात्पर्य है हिसाब न रखना; जिसके कारण किसी व्यक्ति को दोषी न ठहराया जाए।

भजन लिखनेवाला घोषित करता है कि पाप की क्षमा हमें परमेश्वर से मिलती है, फिर चाहे वो किसी भी प्रकार का पाप हो, परमेश्वर के विरूद्ध किया गया पापा या मनुष्य के विरूद्ध किया गया पाप, चाहे बड़ा पाप या छोटा पाप, जानबूझ्कर किया गया पाप या अनजाने में किया गया पाप, या फिर जानते हुए भी कि यह पाप है फिर भी उस पाप में गिरना या भलाई करना जानते हुए भी भलाई न करना।

उपयोग:
आपके पापों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

दिन 27
क्या ही धन्य है वह पुरूष जिसको तू ताड़ना देता है

"हे प्रभु , क्या ही धन्य है वह पुरूष जिसको तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सीखाता है।" भजनसंहिता **94:12**

बुद्धिहीन और मूर्ख कभी भी परमेश्वर की बातों को नहीं मानेंगे, परन्तु परमेश्वर के निज लोगों को उसकी बात मानना ही चाहिये। वह अपने वचनों के द्वारा उन्हें सीखाएगा और निर्देश देगा। ईश्वरीय शिक्षण के बिना संसार की सभी बातों पर मन लगाना कभी भी किसी व्यक्ति को धन्य नहीं बना सकता; वह व्यक्ति एक आनन्दित व्यक्ति है जो निर्देश के साथ–साथ सुधार को अपनाता, और शिक्षण के साथ–साथ कोड़े भी खाता है।

..."हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जानना। जब वह तुझे डांटे तो साहस न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है। वह जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दु:ख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?" (इब्रानियों 12:5-7)

उपयोग:
परमेश्वर ने जो आपको सीखाया है उसे किसी के साथ साझा करो (बांटो)।

दिन 28
जिस राज्य का प्रभु परमेश्वर है, वह क्या ही धन्य है!

"तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा! जिस राज्य का प्रभु परमेश्वर है, वह क्या ही धन्य है!" भजनसंहिता **144:15**

दाऊद ने एक बुद्धिमान और अपने प्रजा की चिन्ता करनेवाले राजा की तरह परमेश्वर से अपनी प्रजा के प्रतिदिन के सामान्य जीवनों पर आशिष देने के लिये प्रार्थना किया। इसके बावजूद परमेश्वर का आशिष केवल उन्ही लोगों को प्राप्त हो पाता जो परमेश्वर के वाचा के अधीन हैं और जब वे परमेश्वर के प्रति वफादार हैं। जब वे अपने राष्ट्र की दूसरी मूर्तियों का तीरस्कार कर केवल यहोवा ही को अपना परमेश्वर और अपना मालिक मानते तब ही उन्हें वो आशिष मिल पाते जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी – और परमेश्वर के लोग प्रसन्न थे।

हम विश्वासियों के बारे में ऐसा कहा जाना चाहिये, धन्य हैं वे लोग जिनका प्रभु परमेश्वर है। यीशु मसीह के अनुयायी होने और विश्वासी होने के कारण ये प्रतिज्ञा और ये उत्तराधिकार हमारा है।

उपयोग:
भजनसंहिता 144 के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 29
विश्वासी मनुष्य पर बहुत आशिर्वाद होते रहते हैं

"*सच्चे मनुष्य पर बहुत आशिर्वाद होते रहते हैं, परन्तु जो धी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता!*" *नीतिवचन* **28:20**

एक सामान्य सिद्धान्त के अनुसार यह सच है; परमेश्वर के नियमों के प्रति विश्वासीपन और आज्ञाकारिता आशिषें लाता है। विशेषत: यह पुरानी वाचा में सच था, जहां पर परमेश्वर ने आज्ञा पालन करनेवाले को आशिषित करने और आज्ञा न मानने वाले को श्रापित करने की प्रतिज्ञा दी है।(व्यवस्थाविवरण 27,28)

जो धनी बनने की जल्दबाज़ी करता है वह अक्सर हमेशा ही छल करने या समझौता करके धन पाने की इच्छा रखता है। परमेश्वर प्रतिज्ञा देते हैं कि ऐसा व्यक्ति दण्डित किया जाएगा, या तो इस जीवन में या आनेवाले जीवन में।

उपयोग:
व्यवस्थाविवरण 27,28 पढ़ो और प्रार्थना करो।

दिन 30
दया करनेवाले पर आशीष फलती है

"दया करनेवाले पर आशीष फलती है, क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है!" *नीतिवचन* **22:9**

अपनी उदारता दिखाने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है गरीबों और ज़रूरतमन्दों की मदद करना। उसकी उदारता सरल रूप से उसके देने में दिखाई देती है, क्योंकि वह अपना भोजन उसके साथ बांटता है।

उदार प्राणी हृष्ट–पुष्ट हो जाता है, और जा औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी। (नीतिवचन 11:25)

यह बात स्मरण रखें, जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। (2कुरिन्थियों 9:6)

उपयोग:
अपने भोजन में से दूसरे व्यक्ति को दो।

दिन 31
उसके पीछे उसके लड़केबाले धन्य होते हैं

"*धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके लड़केबाले धन्य होते हैं!*" *नीतिवचन* **20:7**

अपने बच्चों को माता–पिता का सबसे उत्तम दान ये होगा कि, वो माता–पिता धार्मिकता, खराई के साथ हमेशा अपनी इमानदारी में चलते रहें। इस तरह का चाल–चलन एक ऐसा घर और एक ऐसा वातावरण पैदा करेगा जो उनके बच्चों के आशीष का कारण होगा।

एक धर्मी पुरूष या एक धर्मी स्त्री के लिये उनका खराई से जीना और एक ईमानदार जीवन बिताना वास्तव में हमेशा के लिए जीवित रहेगा। वो अपनी ईमानदारी में चलेंगे, और एक दोषरहित जीवन बिताएंगे।

उपयोग:
हमारे जीवन जीने के तरीके से अपनी आनेवाली पीढ़ी को हम आशिषित कैसे कर पाएंगे इस पर विचार करो और उन विचारों के द्वारा प्रार्थना करो।